ग्रन्थमाला ‘धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र’ : देवतापूजन – खण्ड ४

# देवतापूजनका पूर्वायोजन

हिन्दी (Hindi)

**संकलनकर्ता**

**हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक**

**सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले**

**सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता**

**श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ**

**श्री. निषाद श्याम देशमुख एवं अन्य**

**सनातन संस्था**

**सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !**

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

# ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

## सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २०.९.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

**(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)**

### सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

# सनातनके सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंकी अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्मके विविध विषयों पर गहन अध्यात्म-शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करते हैं । वे कोई घटना, धार्मिक विधि, यज्ञ आदि का सूक्ष्म परीक्षण भी करते हैं। ईश्वरसे प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करनेके लिए उन्हें आसुरी शक्तियोंके आक्रमणोंका भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपाके बलपर वे यह सेवा करते ही हैं ।

## अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)


**१. देवतापूजनसम्बन्धी पंचकर्म** ९

**२. देवतापूजनकी तैयारी** ९

* देवतापूजनकी तैयारीसे सम्भावित लाभ १०
* देवतापूजनकी तैयारीका क्रम १०

**३. देवतापूजनकी पूर्वतैयारीके प्रत्यक्ष कृत्य** ११

* स्तोत्रपाठ अथवा नामजप करना ११
* पूजास्थलकी शुद्धि एवं उपकरणोंकी जागृति करना ११
* रंगोली बनाना * शंखनाद करना १२
* देवतापूजनके लिए आसनका प्रयोग करना १३
* प्राणायाम, देशकाल उच्चारण, संकल्प एवं न्यास करें । १४

* कलश, शंख, घण्टी एवं दीपकी पूजा १४

* पूजासामग्री एवं पूजास्थलकी तथा अपनी शुद्धि १४

**४. देवतापूजनकी तैयारीसे सम्बन्धित कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र १५**

**५. पूजकद्वारा अपने निकट समस्त पूजनसामग्रीकी रचना करना उचित क्यों है ? ५९**

**६. ईश्वरप्राप्ति शीघ्र होनेके लिए केवल देवपूजा पर्याप्त नहीं, अपितु उसके अगले चरणकी साधना भी करनी आवश्यक ६०**

**७. देवताओंका अनादर रोकना, कालानुसार देवताकी आवश्यक उपासना है ! ६०**

**卐 कुछ आनुषंगिक सूत्र ६२**

## परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियोंने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओंमें भविष्य लिख रखा है । इन जीवनाडी-पट्टिकाओंके वाचनके माध्यमसे महर्षि सनातन संस्था का मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका'के वाचन के माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहलेके लेखन में अथवा अब भी साधकोंद्वारा दिए लेखनमें उन्होंने 'प.पू.' अथवा 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है।

---

## सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी उत्तराधिकारिणियोंकी उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचनद्वारा सप्तर्षियोंने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजीको 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है ।

# भूमिका

'देवतापूजन' अर्थात नित्य ईश्वर उपासना हेतु धर्मद्वारा बताई गई एक सरल आचारपद्धति । मनमें भक्तिभावका केन्द्र निर्माण करने, देवताओंकी कृपादृष्टि प्राप्त करने, घरका वातावरण सात्त्विक बनाने एवं भावी पीढीपर धार्मिक संस्कार अंकित करनेमें भी देवतापूजन सहायक है । देवतापूजनकी पूर्वतैयारी, देवतापूजन की नींव है। इस पूर्वतैयारीसे पूजककी शुद्धि तो होती ही है; इसके अतिरिक्त वह पूजासे प्रक्षेपित चैतन्य ग्रहण करनेमें समर्थ बनता है ।

धार्मिक कृत्य एक प्रकारसे अध्यात्मशास्त्रके वैज्ञानिक प्रयोग ही हैं । कोई भी प्रयोग विशिष्ट पद्धतिसे ही करना आवश्यक है । धार्मिक कृत्योंके सन्दर्भमें भी ऐसा ही है । उचित पद्धतिसे धार्मिक कृत्य करनेपर ही हमें उचित फलप्राप्ति होती है । इसके लिए धार्मिक कृत्यका आधारभूत शास्त्र समझना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है । शास्त्र समझकर कृत्य करनेसे श्रद्धा निर्माण होती है । इसलिए धार्मिक कृत्य शास्त्रानुसार होना आवश्यक है । उक्त दृष्टिकोण सामने रख, इस ग्रन्थमें देवतापूजनके आधारभूत शास्त्रका विवेचन किया गया है ।

पूजाके पूर्व स्तोत्रपाठ, मन्त्रजप एवं नामजप करनेका महत्त्व; पूजास्थल एवं उपकरणोंकी शुद्धि; देवताके तत्त्वसे सम्बन्धित रंगोली बनाना; देवतापूजन हेतु प्रयुक्त आसनोंके विविध प्रकार; निर्माल्य निकालने तथा देवताओंके चित्र एवं मूर्ति पोंछने की उचित पद्धति आदि जानकारी इस ग्रन्थमें दी है । साथ ही प्रत्यक्ष पूजा आरम्भ करनेसे पूर्व आचमन, प्राणायाम, देशकालका उच्चार, संकल्प एवं न्यास तथा कलश, शंख, घण्टी एवं दीपपूजन क्यों करें, यह भी बताया गया है । सामान्यतः अधिकांश लोगोंको देवतापूजनके कृत्यके विषयमें जानकारी होती है; परन्तु वे पूजाकी पूर्वतैयारीके विषयमें अनभिज्ञ होते हैं । अनेक लोगोंको पूर्वतैयारी महत्त्वपूर्ण भी नहीं लगती । मनपर पूर्वतैयारीका महत्त्व अच्छी तरह अधिक अंकित हो, इस हेतु इस ग्रन्थमें मुख्यतः पूर्वतैयारीके शास्त्रके महत्त्वपर बल दिया गया है। साथ ही देवतापूजनके महत्त्वपूर्ण कृत्योंका आधारभूत शास्त्र भी बताया गया है ।

श्रीगुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस ग्रन्थको पढनेसे पूजकके लिए पूजाकी पूर्वतैयारीका महत्त्व स्पष्ट हो, पूजा भावपूर्वक हो और उसे पूजासे अधिकाधिक चैतन्य प्राप्त हो । – **संकलनकर्ता**